MAZARATE AWLIYA KI HIKAYAAT (HINDI)

मज़ाराते औलिया की हिकायात

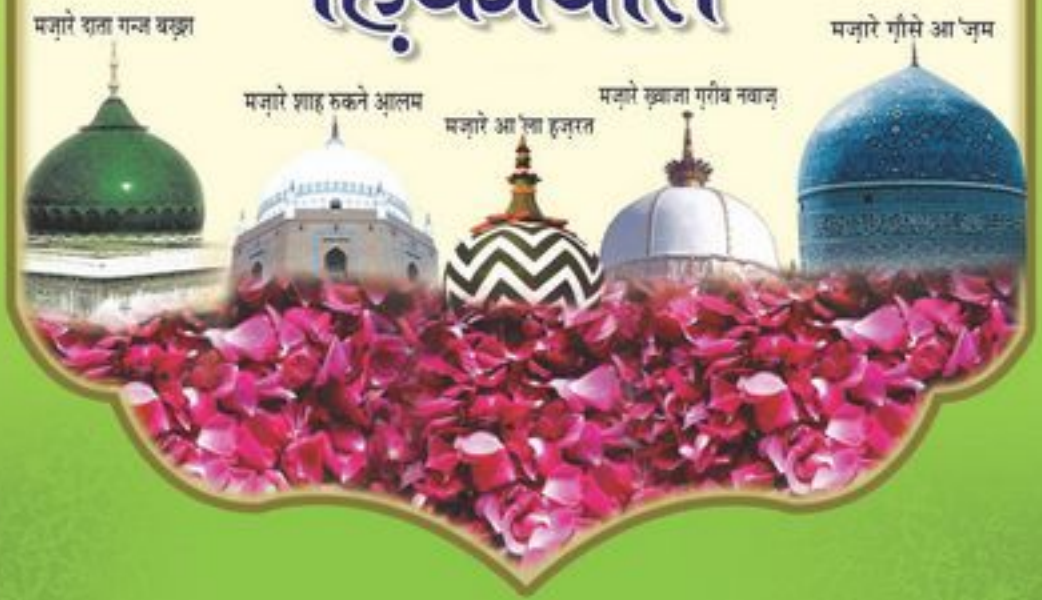

- 500 दीनार मिल गए 3
- साहिबे मज़ार की इनफ़िरादी कोशिश 13
- मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी का त़रीक़ा 16
- मजलिसे मज़ाराते औलिया का तआ़रुफ़ 32
- मज़ारात पर हाज़िरी की निय्यतें 7
- ईसाले सवाब की अहम्मिय्यत 15
- नियाज़ बांटने की एहतियातें 17

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislami hind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = یُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हो सकता है कि शैत़ान आप को येह रिसाला (48 सफ़्हात) मुकम्मल पढ़ने से रोक दे मगर आप पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की मा'लूमात में इज़ाफ़ा होगा।

560 क़ब्रों से अ़ज़ाब उठ गया

एक औ़रत ने मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई त़रीक़ा इरशाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे अ़मल बता दिया। उस ने अपनी मर्ह़ूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस ह़ाल में कि **उस के बदन पर तारकोल** (या'नी डामर) **का लिबास, गर्दन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां थीं** ! येह हैबतनाक मन्ज़र देख कर वोह औ़रत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन येह ख़्वाब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को सुनाया, सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत मग़्मूम हुवे। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो **जन्नत** में एक तख़्त पर अपने **सर पर ताज** सजाए बैठी है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देख कर वोह कहने लगी : "मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं, जिस ने आप को मेरी ह़ालत बताई थी।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : उस के बक़ौल तो तू अ़ज़ाब में

थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? मर्ह़ूमा बोली : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के **दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने हम 560 क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया ।**

(التذکرۃ فی احوال الموتٰی واُمورِ الآخرۃ ج ۱ ص ۷۴ ماخوذاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, दुरूद शरीफ़ की बड़ी बरकत है । जब भी किसी क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़र हो तो याद कर के **तिर्मिज़ी** शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कह लीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ یَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَکُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

तर्जमा : "ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं ।" (ترمذی ج ۲ ص ۳۲۹ حدیث ۱۰۵۵)

फिर सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला तबार पर दुरूदे पाक भेज कर इस का सवाब क़ब्रिस्तान में दफ़्न मुसलमानों को ईसाल कर दीजिये, क्या अ़जब हमारा येह तोह़फ़ए दुरूद किसी की नजात का सबब बन जाए ।

बेकार गुफ़्तगू से मेरी जान छूट जाए
हर वक़्त काश ! लब पे दुरूदो सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 189)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ 500 दीनार मिल गए

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ اللهِ الوَالِي नक़्ल करते हैं कि मक्कए मुकर्रमा के एक शाफ़ेई मुजावर का कहना है : मिस्र में एक ग़रीब शख़्स के यहां बच्चे की **विलादत** हुई उस ने एक समाजी कारकुन से राबिता किया। वोह बच्चे के वालिद को ले कर कई लोगों से मिला मगर किसी ने माली इमदाद न की। आख़िरे कार एक बुज़ुर्ग के **मज़ार शरीफ़** पर हाज़िरी दी, जहां उस समाजी कारकुन ने कुछ इस तरह फ़रियाद अर्ज़ की : "या सय्यिदी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, आप अपनी **ज़ाहिरी ज़िन्दगी** में बहुत कुछ दिया करते थे, आज कई लोगों से **बच्चे** के लिये मांगा मगर किसी ने कुछ न दिया।" येह कहने के बा'द उस समाजी कारकुन ने ज़ाती तौर पर आधा दीनार बच्चे के वालिद को उधार पेश करते हुवे कहा : "जब कभी आप के पास पैसों की तरकीब बन जाए मुझे लौटा देना।" दोनों अपने अपने रास्ते हो लिये। समाजी कारकुन को रात ख़्वाब में **साहिबे मज़ार का दीदार** हुवा, फ़रमाया : आप ने मुझ से जो कहा वोह मैं ने सुन लिया था मगर उस वक़्त जवाब देने की इजाज़त न थी, मेरे घर वालों से जा कर कहिये कि वोह अंगीठी (اَنْ۔گی۔ٹھی) के नीचे की जगह खोदें, एक मश्कीज़ा निकलेगा उस में 500 दीनार होंगे वोह सारी रक़म बच्चे के वालिद को पेश कर दीजिये, चुनान्चे, वोह **साहिबे मज़ार** के घर वालों के पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया। उन लोगों ने निशान देही के मुताबिक़ जगह खोदी और 500

दीनार निकाल कर हाज़िर कर दिये। समाजी कारकुन ने कहा : येह सब दीनार आप ही के हैं, मेरे ख़्वाब का क्या ए'तिबार ! वोह बोले : **जब हमारे बुज़ुर्ग दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी सख़ावत करते हैं तो हम क्यूं पीछे हटें** ! चुनान्चे, उन लोगों ने बा इस्रार वोह दीनार उस समाजी कारकुन को दिये और उस ने जा कर उस बच्चे के वालिद को पेश कर दिये और सारा वाक़िआ़ सुनाया। उस ग़रीब शख़्स ने **आधे दीनार** से क़र्ज़ा उतारा और **आधा दीनार** अपने पास रखते हुवे कहा : "मुझे येही काफ़ी है।" बाक़ी सब उसी समाजी कारकुन को देते हुवे कहा : बक़िय्या तमाम दीनार ग़रीब व नादार लोगों में तक़्सीम फ़रमा दीजिये। रावी का बयान है : मुझे समझ नहीं आती कि इन सब में कौन ज़ियादा सख़ी है ! (احیاءُ علوم الدین ج۳ص۳۰۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

ख़ाली कभी फेरा ही नहीं अपने गदा को
ऐ साइलो मांगो तो ज़रा हाथ बढ़ा कर

ख़ुद अपने भिकारी की भरा करते हैं झोली
ख़ुद कहते हैं या रब ! मेरे मंगता का भला कर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलियाए किराम बा'दे वफ़ात भी दस्त्गीरी करते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अपने रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से मज़ारात में ह़यात होते हैं, आने जाने वालों की बात सुनते हैं, हिदायत व

इआनत करते हैं और अपने घरों के मुआमलात की भी ख़बर रखते हैं, जभी तो साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़्वाब में जा कर उस समाजी कारकुन की रहनुमाई फ़रमाई और उस नौ मौलूद (या'नी पैदा होने वाले छोटे बच्चे) के ग़रीब बाप की दस्तगीरी (دَسْت۔گیری) और माली इमदाद की। मज़्कूरा हिकायत में राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की भी तरग़ीब है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत है ! चुनान्चे, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ ख़र्च करे उस के लिये सात सो गुना सवाब लिखा जाता है।" (ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، الحدیث ۱۶۳۱، ج ۳، ص ۲۳۳)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरी नहीं कि बहुत सारा माल पास हो तो ही ख़र्च किया जाए बल्कि इख़्लास के साथ एक रूपिया ख़र्च कर के भी सवाब कमाया जा सकता है। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की बहुत सी **सूरतें** हैं मसलन : किसी भूके को खाना खिला देना, ग़रीब बीमार को दवाई दिला देना, पानी की सबील बनवा देना, दीनी कुतुब की लाइब्रेरी बनवा देना, लंगरे रसाइल (या'नी दीनी कुतुब तक़्सीम) करना और जामिआत व मसाजिद की माली ख़िदमत करना वग़ैरहा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ाराते औलिया की हाज़िरी बाइसे बरकत है

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के मज़ाराते तय्यिबात पर हाज़िरी देने और उन से फ़ैज़ लेने का बुज़ुर्गों का मा'मूल रहा है, चुनान्चे, अपने ज़माने में हनाबिला (या'नी फ़िक़्हे हम्बली के पैरूकारों) के शैख़ **इमाम ख़ल्लाल** رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

मुझे जब भी कोई मुआ़मला दरपेश होता है, मैं **इमाम मूसा काज़िम बिन जा'फ़र सादिक़** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर आप का वसीला पेश करता हूं। **अल्लाह** तआ़ला मेरी मुश्किल को आसान कर के मुझे मेरी **मुराद** अ़त़ा फ़रमा देता है। (تاریخ بغداد، ج ۱ ص ۱۳۳) जब कि करोड़ों शाफ़ेइ़य्यों के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे शाफ़ेई** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के **इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी **ह़ाजत** पूरी कर देता है। (الخیرات الحسان ص ۲۳۰، مدینہ پبلشنگ کراچی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मदनी फूल

(वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सूरतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आयतुल कुरसी** और तीन बार **सूरतुल इख़्लास** पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साह़िबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** तआ़ला उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में **नूर** पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा। (فتاوی عالمگیری ج ۵ ص ۳۵۰ دار الفکر بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ारात पर ह़ाज़िरी की 26 निय्यतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब जब मौक़अ़ मिले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के मज़ारात पर अच्छी अच्छी **निय्यतों** से ह़ाज़िर हो कर फ़ैज़याब होना चाहिये । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(المعجم الكبير للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

एक अ़मल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी **नेकियों का सवाब** मिलेगा । मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर भी ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिये, मसलन : ۞ रिज़ाए इलाही के लिये मज़ार पर ह़ाज़िरी दूंगा ۞ ह़त्तल मक़्दूर बा वुज़ू रहूंगा ۞ ह़ाज़िरी के लिये जाते हुवे ज़िक्रो दुरूद से अपनी ज़बान तर रखूंगा ۞ फ़ुज़ूल गुफ़्तगू और ۞ बद निगाही से बचूंगा ۞ रास्ते में लोगों को सलाम करूंगा ۞ ह़ाज़िरी के आदाब का ख़याल रखूंगा ۞ भीड़ की सूरत में धक्कम पील से बचूंगा ۞ ख़ुद को धक्का लगा तो सब्र करूंगा ۞ अगर कोई झगड़ा करेगा तो ह़क़ पर होने के बा वुजूद उस से झगड़ा न कर के ह़दीसे पाक में दी हुई उस बिशारत का ह़क़दार बनूंगा, जिस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) किनारे में एक घर का ज़ामिन हूं । (ابوداؤد ج۴ ص ۳۳۲ حدیث ۴۸۰۰) ۞ अगर मेरी वजह से किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त आ़जिज़ी के साथ मुआ़फ़ी मांगूंगा ۞ जितना मुयस्सर हुवा वहां पर ज़िक्रो दुरूद,

तिलावत व ना'त और दीनी कुतुब के मुत़ालए़ का सिलसिला रखूंगा ۞ वहां पर ख़ाली लिफ़ाफ़े वग़ैरा फेंक कर गन्दगी नहीं फैलाऊंगा ۞ ह़ाज़िरी के दौरान नमाज़ का वक़्त हो गया तो मस्जिद का रुख़ करूंगा ۞ इ़ल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिला तो पीछे नहीं रहूंगा ۞ साहिबे मज़ार को ईसाले सवाब करूंगा ۞ साहिबे मज़ार से नज़रे करम की भीक मांगूंगा ۞ इन के वसीले से (सिर्फ़ दुन्या के लिये नहीं बल्कि क़ब्रो ह़श्र के मुआ़मलात के लिये भी) अच्छी अच्छी दुआ़एं करूंगा ۞ नियाज़ तक़्सीम करूंगा ۞ लंगरे रसाइल करूंगा (या'नी मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल बांटूंगा) और ۞ मुमकिन हुवा तो ह़ाज़िरीन को नेकी की दा'वत पेश करूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿2﴾ ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदद फ़रमाई

ह़ज़रते शैख़ अह़मद दमयाती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदए माजिदा के साथ एक क़ह़त़ ज़दा साल में मिस्र से ख़रीदे गए दो ऊंटों पर सुवार हो कर सफ़रे ह़ज इख़्तियार किया। ह़ज से फ़ारिग़ हो कर मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا का रुख़ किया, वहां पहुंचे तो ऊंट जान से गुज़र गए। हम ख़ाली जेब हो चुके थे, न ऊंट ख़रीद सकते थे और न ही किराए की सुवारी लेने के क़ाबिल रहे थे। मैं इस तंग दस्ती में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सफ़िय्युद्दीन क़श्शाशी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सारी

कैफ़िय्यत अ़र्ज़ कर दी, उन्हें येह भी बताया कि परेशानी के ह़ल तक मदीनए त़य्यिबा में ही ठहर जाना चाहता हूं, वोह कुछ देर ख़ामोश रहे, फिर फ़रमाने लगे : आप अभी हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा जान ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िरी दें, जितना मुमकिन हो सके कुरआन पढ़ें और फिर अव्वल से आख़िर तक उन्हें अपना ह़ाल सुनाएं। मैं ने ता'मीले इरशाद में चाश्त के वक़्त ही ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी दी और शैख़े गिरामी के हुक्म के मुत़ाबिक़ कुरआने ह़कीम पढ़ कर अपना ह़ाल सुना डाला। ज़ोहर से पहले वापस हुवा और बाबे रह़मत में त़हारत ख़ाने से वुज़ू कर के मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल हुवा तो वहां वालिदए मोह़तरमा को मौजूद पाया, फ़रमाने लगीं : अभी तुम्हें एक आदमी पूछ रहा था। मैं ने अ़र्ज़ की : अब वोह कहां है ? कहने लगीं : ह़रमे नबवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे जाओ। मैं उस त़रफ़ गया तो एक पुर हैबत शख़्सिय्यत के मालिक सफ़ेद दाढ़ी वाले बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई। मुझे देखते ही फ़रमाने लगे : "शैख़ अह़मद मरह़बा !" मैं ने आगे बढ़ कर उन के हाथ चूम लिये। फ़रमाया : मिस्र चले जाओ। मैं ने अ़र्ज़ की : आक़ा ! किस के साथ ? फ़रमाने लगे : चलो मैं किसी आदमी से तुम्हारे किराए की बात करा देता हूं। मैं उन के साथ चल पड़ा, वोह मुझे मदीनए त़य्यिबा में मिस्री ह़ाजियों के केम्प में ले गए। वोह एक ख़ैमे में दाख़िल हुवे तो पीछे पीछे मैं भी दाख़िल हो गया, उन्हों ने ख़ैमे के मालिक को

सलाम किया, वोह उन्हें देखते ही उठ खड़ा हुवा और आप के हाथ चूम कर बड़े अदबो एह़तिराम के साथ बिठाया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : शैख़ अह़मद और इन की वालिदा को मिस्र पहुंचाना है । वोह मिस्री तय्यार हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : कितने पैसे लोगे ? उस ने अ़र्ज़ की : जितने आप की मरज़ी होगी । फ़रमाया : इतने इतने ले लेना । उस ने बात मान ली और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी वक़्त अपने पास से किराए का ज़ियादा ह़िस्सा अदा कर दिया । फिर मुझे फ़रमाने लगे : शैख़ अह़मद ! अपनी वालिदा और सामान को यहां ले आओ । मैं वालिदए माजिदा और सामान के साथ वापस आया तो उस मिस्री को फ़रमाने लगे : बाक़ी किराया तुझे मिस्र पहुंच कर मिल जाएगा । इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए फ़ातिह़ा पढ़ी और उसे हमारे साथ अच्छा सुलूक करने की ताकीद की, फिर उठ खड़े हुवे । मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ चल पड़ा । जब हम मस्जिद शरीफ़ पहुंचे तो फ़रमाया : तुम मुझ से पहले अन्दर चले जाओ, लिहाज़ा मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा और उन का इन्तिज़ार करने लगा । जब नमाज़ का वक़्त हो गया तो मैं ने उन को ढूंडा लेकिन वोह नज़र न आए । बा'दे नमाज़ भी मैं ने बार बार तलाश किया मगर न मिले । फिर मैं उस आदमी के पास पहुंचा जिसे वोह किराया दे कर आए थे । जब मैं ने उस से आप के बार में दरयाफ़्त किया तो वोह कहने लगा : मैं तो उन्हें नहीं पहचानता और आज से पहले उन्हें देखा भी नहीं था, मगर जब वोह मेरे पास तशरीफ़ लाए थे तो मुझ पर ऐसा ख़ौफ़ और इतनी हैबत

त़ारी हुई जो इस से पहले कभी नहीं हुई थी । मैं लौट आया और उन्हें दीगर मक़ामात पर बहुत तलाश किया लेकिन वोह न मिल सके । जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सफ़िय्युद्दीन अह़मद क़श्शाशी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन को सारी बात बताई तो फ़रमाने लगे वोह सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **रूहे पाक** ही तो थी जो जिस्मानी शक्ल में तुम्हारे सामने आई थी । फिर मैं उस आदमी के पास पहुंचा जिस के साथ मिस्र जाना था और बाक़ी ह़ाजियों के साथ सफ़र पर रवाना हो गया । उस ने दौराने सफ़र मह़ब्बत व इकराम और हुस्ने अख़्लाक़ का ऐसा मुज़ाहरा किया कि मैं ह़ैरान रह गया । येह सब कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बरकत थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के वसीले से हमें नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाए । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِک

(जामेए़ करामाते औलिया, जि. 1 स. 133)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से जहां रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा जान सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान मा'लूम हुई वहीं येह दर्स भी मिला कि मज़ाराते मुबारका पर जा कर **तिलावते क़ुरआन** करना बहुत सारे सवाब के साथ साथ साह़िबे मज़ार की ख़ुशी और उन की तवज्जोह ह़ासिल करने का ज़रीआ़ भी है । इस लिये हमारी कोशिश होनी चाहिये कि मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर इधर उधर के फ़ुज़ूल और ग़ैर शरई़ कामों में मश़ग़ूल होने के बजाए जितना मुमकिन हो सके क़ुरआने पाक की तिलावत की सआ़दत ह़ासिल करें । यक़ीनन तिलावते क़ुरआन की बड़ी फ़ज़ीलत है,

चुनान्चे, ख़ातमुल मुर्सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी । मैं येह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि الف एक ह़र्फ़, لام एक ह़र्फ़ और میم एक ह़र्फ़ है ।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۴ ص۴۱۷ حدیث ۲۹۱۹)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ वाह क्या बात है आ़शिक़े क़ुरआन की

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی रोज़ाना एक बार **ख़त्मे क़ुरआने पाक** फ़रमाते थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात क़ियाम (इबादत) फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तह़िय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते । तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **क़ुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है । नमाज़ और **तिलावते क़ुरआन** से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है ।

चुनान्चे, वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक, एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि आप** (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं !!!**

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साहिबा ने बताया : वालिदे मोहतरम علیه رَحْمَةُ اللهِ الاکرم रोज़ाना दुआ किया करते थे : "या **अल्लाह** ! अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द **क़ब्र** में नमाज़ पढ़ने की सआदत अता फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना ।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते कुरआन** की आवाज़ आ रही होती । (حِلیۃُ الاولیاء ج۲ص۳۶۲۔۳۶۶مُلتقطاً دار الکتب العلمیة)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ साहिबे मज़ार की इनफ़िरादी कोशिश

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में बुज़ुर्गों का बहुत अदब किया जाता है, बल्कि सच्ची बात येह है कि **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत से दा'वते इस्लामी **फ़ैज़ाने औलिया** ही की ब दौलत चल रही है । चुनान्चे, एक **साहिबे मज़ार** बुज़ुर्ग की मदनी क़ाफ़िले के लिये **इनफ़िरादी कोशिश** का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ अपने अन्दाज़ में पेश करता हूं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आशिक़ाने रसूल** का एक मदनी क़ाफ़िला **चकवाल** (पंजाब पाकिस्तान) से मुज़फ़्फ़राबाद और अत़राफ़ के देहातों में सुन्नतों की बहारें लुटाता हुवा एक मक़ाम 'अन्वार शरीफ़' वारिद हुवा, वहां से **हाथों हाथ** चार इस्लामी भाई तीन दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ शरीक हुवे, इन चारों में 'अन्वार शरीफ़' के साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ानवादे के एक फ़रज़न्द भी थे। **मदनी क़ाफ़िला** नेकी की दा'वत की धूमें मचाता हुवा 'गढ़ी दूपट्टा' पहुंचा। जब अन्वार शरीफ़ वालों के तीन दिन मुकम्मल हो गए तो **साहिबे मज़ार** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के रिश्तेदार ने कहा : मैं तो वापस नहीं जाऊंगा क्यूंकि आज रात मैं ने अपने 'ह़ज़रत' رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे थे : "बेटा ! पलट कर घर न जाना मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ मज़ीद आगे सफ़र जारी रखना।" **साहिबे मज़ार** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **इनफ़िरादी कोशिश** का येह वाक़िआ़ सुन कर मदनी क़ाफ़िले में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, सब के ह़ौसलों को मदीने के 12 चांद लग गए और **अन्वार शरीफ़** से आए हुवे चारों इस्लामी भाई हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर चल पड़े। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 236)

देते हैं फ़ैज़े आ़म औलियाए किराम
लूटने सब चलें क़ाफ़िले में चलो

औलिया का करम तुम पे हो ला जरम
मिल के सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ मेरी ह़ाजत पूरी हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सुलैमान عَلَيْه رَحمَةُ الله المنّان फ़रमाते हैं कि मुझे एक ह़ाजत थी और मैं काफ़ी तंग दस्त था। ह़ज़रते मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی की क़ब्रे अन्वर पर मेरी ह़ाज़िरी हुई, मैं ने तीन बार **सूरए इख़्लास** की तिलावत की और इस का सवाब आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और तमाम मुसलमानों की अरवाह़ को पहुंचाया फिर अपनी ह़ाजत बयान की। जूं ही मैं वहां से वापस आया **मेरी ह़ाजत पूरी हो चुकी थी।**

(الروض الفائق ص١٨٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی बह़रुद्दुमूअ़ में लिखते हैं : जिस ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में कोई ह़ाजत पेश करनी हो तो उसे चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगे اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ ज़रूर क़बूल होगी। (بحر الدموع ص٤٠ ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईसाले सवाब की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला ह़िकायत से बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को ईसाले सवाब करने की अहम्मिय्यत भी मा'लूम हुई, लिहाज़ा जब भी

किसी मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी देने का शरफ़ हासिल हो तो साहिबे मज़ार को ज़रूर **ईसाले सवाब** कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमें इस की बड़ी बरकतें मिलेंगी।

﴾6﴿ नूरानी तबाक़

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग का बयान है : मैं हज़रते राबिआ़ बसरिया رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के ह़क़ में दुआ़ किया करता था। एक दफ़्आ़ मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा, फ़रमा रही थीं : "तुम्हारे तहाइफ़ (या'नी दुआ़एं और ईसाले सवाब) नूर के तबाक़ों में हमारे पास आते हैं जो नूर के रूमालों से ढांपे होते हैं।" (الرسالۃ القشیریۃ، باب رؤیا القوم، ص۴۲۴)

मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी और ईसाले सवाब का तरीक़ा

(औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के) मज़ाराते तय्यिबात पर हाज़िर होने में पाइंती (پا۔ءِں۔تی या'नी क़दमों) की तरफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवाजहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़ा हो और मुतवस्सित (مُ۔تَ۔وَس۔سِط या'नी दरमियानी) आवाज़ में (इस तरह) सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاسَیِّدِیْ وَرَحْمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ फिर **दुरूदे ग़ौसिया** तीन बार, **अल ह़म्द शरीफ़** एक बार, **आयतुल कुरसी** एक बार, **सूरए इख़्लास** सात बार, फिर "**दुरूदे ग़ौसिया**" सात बार, और वक़्त फ़ुरसत दे तो **सूरए यासीन** और **सूरए मुल्क** भी पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर

मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अ़मल के क़ाबिल है और इसे मेरी त़रफ़ से इस बन्दए मक़्बूल को नज़्र पहुंचा। फिर अपना जो मत़लब जाइज़े शरई हो उस के लिये दुआ़ करे और साहि़बे मज़ार की रूह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर उसी त़रह़ सलाम कर के वापस आए। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9 स. 522) दुरूदे ग़ौसिया येह है :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

(मदनी पंज सूरह स. 260)

नियाज़ बांटने की एह़तियातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़ाराते औलिया पर नियाज़ तक़्सीम कर के भी साहि़बे मज़ार को ईसाले सवाब किया जा सकता है, यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये नियाज़ वग़ैरा तक़्सीम करने की बड़ी फ़ज़ीलत है, चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 521 पर लिखते हैं : खाना खिलाना-लंगर बांटना भी मन्दूब (या'नी अच्छा अ़मल) व बाइ़से अज्र है, ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يُبَاهِي مَلٰٓئِكَتَهٗ بِالَّذِيْنَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ مِنْ عَبِيْدِهٖ

या'नी **अल्लाह** तआ़ला अपने उन बन्दों के साथ जो लोगों को खाना खिलाते हैं फ़िरिश्तों पर मुबाहात (या'नी फ़ख़्र) फ़रमाता है। (الترغیب والترھیب، ج۲، ص۳۸، الحدیث۲۲)(फ़तावा रज़विय्या जि. 24, स. 521)

लेकिन लंगर तक़्सीम करते हुवे इस बात का ख़याल ज़रूर रखिये कि किसी त़रह़ भी लंगर की बे हुर्मती न हो, न पाउं में आए, न मज़ार शरीफ़ का फ़र्श आलूदा हो, धक्कम पील से बचने के लिये इस्लामी भाइयों को बिठा कर या क़ित़ार बना कर लंगर तक़्सीम किया जाए, आने वाले ज़ाइरीन के हुक़ूक़ का ख़याल रखा जाए कि लंगर तक़्सीम करने की वजह से उन को ह़ाज़िरी देने में किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का सामना न करना पड़े और ख़ास त़ौर पर मज़ार शरीफ़ की ता'ज़ीम का मुकम्मल एहतिमाम किया जाए, ऐसा न हो कि एक त़रफ़ लंगर तो तक़्सीम कर के अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ बनें और दूसरी त़रफ़ मज़ार शरीफ़ की बे अदबी के मुर्तकिब हो जाएं। खाने की नियाज़ के साथ साथ मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल का **'लंगरे रसाइल'** कर के भी बे शुमार **सवाबे जारिया** साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में पेश किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿7﴾ दाता साह़िब को ईसाले सवाब की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين को ईसाले सवाब करना हिदायत का ज़रीआ़ भी बन सकता है, चुनान्चे, **कोरंगी** (बाबुल मदीना कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : ग़ालिबन सिने. 1992 ईसवी की बात है, हम उन दिनों गुलिस्ताने जोहर (बाबुल मदीना) में रहते थे। छोटी सी उ़म्र में T.V पर फ़िल्में डिरामे देखने के मन्हूस शौक़ ने मुझे **नाचने** का शौक़ीन बना दिया

यहां तक कि मैं ने डान्स के मुक़ाबलों में भी हिस्सा लिया और इन्आ़मात भी ह़ासिल किये । जब मेरी तस्वीरें अख़्बारात में छपीं तो ख़ानदान में ख़ूब पज़ीराई मिली, मैं 'फूल कर कुप्पा' हो गया और डान्स सीखने की एकेडमी के अन्दर दाख़िला ले लिया और इस **मन्हूस फ़न** में इतनी महारत ह़ासिल की, कि 'डान्स डाइरेक्टर' (या'नी डान्स सिखाने वाला) बन गया । मैं ने फ़्रान्स, थाईलेन्ड वग़ैरा का सफ़र किया और हिन्द से 'क्लासीकल कथक डान्स' भी सीखा । अब मैं ऐसे मक़ाम पर पहुंच चुका था कि मश्हूर अदाकाराएं और अदाकार मुझ से डान्स सीखा करते थे । इस बे ह़याई के माह़ोल में मुझे ऐसी जवान लड़कियां भी मिलीं जो अच्छे से अच्छा डान्स सीखने के लालच में "कुछ भी" करने को तय्यार थीं । **इसी** दौरान मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल भी हुवा मगर मेरी आंखें न खुलीं । लेकिन वालिदा की हिदायत की ब दौलत दुरूदे पाक से मह़ब्बत थी । ग़ालिबन एप्रील सिने 2005 ईसवी में एक डान्स प्रोग्राम के सिलसिले में मर्कज़ुल औलिया लाहौर जाना हुवा, **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के सामने से गुज़रते हुवे मैं ने उन्हें **दुरूदे पाक** पढ़ कर ईसाले सवाब किया । नाच नाच कर थक हार कर जब सोया तो ख़्वाब के अन्दर क्या देखता हूं कि मेरे मर्ह़ूम वालिदैन भड़कती आग के घेरे में हैं और मुझे देख कर चिल्ला चिल्ला कर कुछ यूं कह रहे हैं : "हम तेरी इस्लामी तर्बिय्यत करने में कोताही कर गए, हाए हमारी ख़राबी ! तू डान्सर और शराबी बन गया ! अब तेरी वजह से आग हमें जला रही है, तू तौबा कर ले ताकि तू

भी अ़ज़ाब से बचे और हम भी छुटें।" मैं ख़्वाब में रोने लगा और मेरी आंख खुल गई और मैं काफ़ी देर तक रोता रहा। फिर मैं **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवा, क़दमों की त़रफ़ बैठ कर रो रो कर मैं ने दाता साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से फ़रियाद की : "**या दाता** ! अब आप ही मुझे संभालिये !" इतने में किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा, सर उठा कर देखा तो सफ़ेद लिबास और सर पर सब्ज़ इमामे में मल्बूस एक साहि़ब थे, जो कि मुशफ़िक़ाना लहजे में फ़रमा रहे थे : बेटा ! मौत किसी भी वक़्त आ सकती है, जल्द गुनाहों से तौबा कर लो। मैं ने पूछा : मैं कहां जाऊं ? मुस्कुरा कर फ़रमाने लगे : "बाबुल मदीना कराची आ जाओ।" येह कह कर वोह एक दम मेरी नज़रों से ओझल हो गए ! येह मेरी बेदारी का वाक़िआ़ है।

जब मैं बाबुल मदीना कराची पहुंचा तो किसी न किसी त़रह़ **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़िदमत में जा पहुंचा, जब पहली बार इन की ज़ियारत की तो मेरी ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि येही तो थे जो मुझे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ार पर मिले थे और मुझे बाबुल मदीना आने का फ़रमाया था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मुझ पर बहुत शफ़्क़त फ़रमाई। इसी दौरान और एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा से भी मुलाक़ात हुई तो उन की इनफ़िरादी कोशिश से मैं ने सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी

क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया । जब अमीरे क़ाफ़िला ने सीखने सिखाने के ह़ल्क़े में **ग़ुस्ल का त़रीक़ा** बताया तो मेरा दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ गया कि **या ख़ुदा** ! मैं तो नापाकी की ह़ालत में हूं, फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकला और उसी वक़्त ग़ुस्ल किया । मदनी क़ाफ़िले में बताए जाने वाले त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मैं ने रात **सलातुत्तौबा** पढ़ी और सो गया । मैं ने ख़्वाब में देखा कि वालिदए मर्ह़ूमा चांद सा चेहरा चमकाए मस्जिदुन नबविय्यिश्शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में नमाज़ अदा कर रही हैं, सलाम फेरने के बा'द उन्हों ने मुझे गले लगा लिया । मैं रोने लगा, अम्मी जान ने कहा : अब मैं बहुत ख़ुश हूं, आओ ! नमाज़ पढ़ते हैं, फ़ारिग़ हो कर मैं ने अब्बू जान के बारे में पूछा तो उन्हों ने एक त़रफ़ इशारा किया । मैं उस त़रफ़ चल दिया, चलते चलते एक बहुत बड़े मैदान में पहुंच गया, दरमियान में शीशे का एक कमरा था, बहुत से लोग उस के अन्दर जाने की नाकाम कोशिशें कर रहे थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बड़े आराम से अन्दर चला गया, वहां **पांच बुज़ुर्ग** थे, एक बुज़ुर्ग जो दरमियान में क़दरे ऊंचाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे, उन के चेहरे पर इतना नूर था कि निगाह नहीं ठहर रही थी । मैं ने उन बुज़ुर्गों से पूछा : मेरे अब्बू जान कहां हैं ? तो एक बुज़ुर्ग ने कमरे के पिछले हिस्से की त़रफ़ इशारा किया । वहां गया तो वालिद साह़िब अन्धेरे में बैठे ज़ारो क़ित़ार रो रहे थे । मैं ने रोने का सबब पूछा तो जवाब दिया : हर एक इन बुज़ुर्गों को तोह़्फ़े पेश कर रहा है मगर मैं क्या पेश करूं, तुम मुझे कुछ भिजवाते ही

नहीं ! यका यक एक नूर का त़श्त मेरे हाथ में आ गया, मैं ने वालिदे मर्ह़ूम को दे दिया, वालिद साह़िब मुझे साथ लिये कमरे में दाख़िल हो गए और नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग की ख़िदमत में वोह नूरानी थाल पेश कर दिया। फिर हम वहां से बाहर निकल आए, **उस वक़्त मेरे दिल में ख़याल आया कि हो न हो येह नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग मेरे नूर वाले आक़ा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। फिर मेरी आंख खुल गई। देखा तो मेरा जिस्म ख़ुश्बू से महक रहा था। येह ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब देखने के बा'द मैं ने तमाम गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा की और अमीरे क़ाफ़िला के हाथों **अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा लिया और दाढ़ी शरीफ़ बढ़ाने की भी निय्यत कर ली।**

कुछ ही दिनों बा'द मैं ने **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में 63 रोज़ा **मदनी तर्बिय्यती कोर्स** और 41 दिन का **मदनी क़ाफ़िला कोर्स** करने की सआ़दत पाई। फिर मैं ने **इमामत कोर्स** में भी दाख़िला लिया, चन्द ही दिन गुज़रे थे कि मैं ने 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये ख़ुद को पेश कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक (सिने 1426 हिजरी, सिने 2005 ईसवी) में आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली, एक दिन बयान में मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ **मदनी बहार** सुनाई तो एक इस्लामी भाई को मुझ से बहुत हमदर्दी हो गई और उन्हों ने **ईदुल फ़ित्र** के तक़रीबन एक हफ़्ते

बा'द मुझे मुलाज़मत पर लगवा दिया, फिर मेरी मदनी माहोल में शादी भी हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर डिवीज़न सत्ह़ पर 'मजलिसे डॉक्टर्ज़' और 'मजलिसे खेल' के रुक्न के तौ़र पर अपनी सुन्नतों भरी तह़रीक, 'दा'वते इस्लामी' की तरक़्क़ी के लिये कोशां हूं। **मेरी** येही मदनी बहार दुन्या के वाहिद ह़क़ीक़ी इस्लामी चैनल '**मदनी चैनल**' पर भी दिखाई और सुनाई गई तो मुझे ह़ैदराबाद के इस्लामी भाई का फ़ोन आया कि यहां पर एक बद मज़हब आप की **मदनी बहार** देख कर बहुत मुतअस्सिर हुवा है और आप से मिलना चाहता है, अगर आप समझाएंगे तो उम्मीद है वोह तौबा कर लेगा, मैं **इनफ़िरादी कोशिश** की निय्यत से ह़ैदराबाद पहुंच गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस बद मज़हब ने न सिर्फ़ ख़ुद बुरे अ़क़ाइद से तौबा की बल्कि उस के अकसर घर वाले भी ताइब हो गए और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुरीद बन गए। **अल्लाह** तआ़ला मुझे और मेरे कुम्बे को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

गिर पड़ के यहां पहुंचा, मर मर के इसे पाया
छूटे न इलाही ! अब, संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस 'मदनी बहार' से हमें बे शुमार **मदनी फूल** चुनने को मिलते हैं। मसलन ﴾1﴿ घर के अन्दर अगर T.V पर फ़िल्में डिरामे गाने बाजे

चलते हों तो अपनी और अवलाद के किरदार की तबाही का सामान होता है जैसा कि 'बच्चा' फ़िल्में देख देख कर 'डान्स डाइरेक्टर' बन गया ! ﴾2﴿ दुरूद शरीफ़ से मह़ब्बत भी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारे का सबब बनती है जैसा कि साबिक़ा डान्स डाइरेक्टर का हुवा ﴾3﴿ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين को ईसाले सवाब करना हिदायत का ज़रीआ़ बन सकता है जैसा कि साह़िबे मदनी बहार ने दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **हुज़ूर दाता साह़िब** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को **ईसाले सवाब** किया तो हिदायत की सबील बननी शुरूअ़ हुई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें फ़िल्में डिरामों से बचने, नमाज़ों की पाबन्दी करने, दुरूदे पाक पढ़ने, अपनी अवलाद की मदनी तर्बिय्यत करने, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين को ईसाले सवाब करने और इन के मज़ारात पर बा अदब ह़ाज़िर होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हम को सारे औलिया से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ ख़्वाजा मह़बूबे इलाही के मज़ार पर ह़ाज़िरी

सरकारे **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जब 21 बरस के नौ जवान थे उस वक़्त का वाक़िआ़ ख़ुद उन ही की ज़बानी मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे, फ़रमाते हैं : सतरहवीं शरीफ़ माहे फ़ाख़िर रबीउ़ल आख़िर सिने 1293 हिजरी में कि

फ़क़ीर को इक्कीसवां साल था । आ'ला ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम सय्यिदुना अल वालिद قُدِّسَ سِرُّہُ الماجِد व ह़ज़रते मुह़िब्बुर्रसूल जनाब मौलाना मौलवी मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर साह़िब बदायूनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हमराहे रिकाब ह़ाज़िरे बारगाहे बे कस पनाहे हुज़ूरे पुरनूर मह़बूबे इलाही निज़ामुल ह़क़्क़े वद्दीन सुल्त़ानुल औलिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुवा । हुजरए मुक़द्दसा के चार त़रफ़ मजालिसे बात़िला लह्वो सरौद गर्म थीं । शोरो ग़ोग़ा से कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती । दोनों ह़ज़राते आ़लियात अपने क़ुलूबे मुत़मइन्ना के साथ ह़ाज़िरे मुवाजहए अक़्दस (مُ۔وا۔جَ۔ہَ۔ ءِ اَقدس) हो कर मश्ग़ूल हुवे । इस फ़क़ीरे बे तौक़ीर ने हुजूमे शोरो शर से ख़ात़िर (या'नी दिल) में **परेशानी** पाई । दरवाज़ए मुत़ह्हरा पर खड़े हो कर ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की, कि ऐ मौला ! ग़ुलाम जिस के लिये ह़ाज़िर हुवा, येह आवाज़ें उस में ख़लल अन्दाज़ हैं । (लफ़्ज़ येही थे या इन के क़रीब, बहर ह़ाल मज़्मूने मा'रूज़ा येही था) येह अ़र्ज़ कर के बिस्मिल्लाह कह कर दहना पाउं दरवाज़ए हुजरए त़ाहिरा में रखा बिऔ़ने रब्बे क़दीर वोह सब आवाज़ें दफ़्अ़तन गुम थीं । मुझे गुमान हुवा कि येह लोग **ख़ामोश** हो रहे, पीछे फिर कर देखा तो वोही बाज़ार गर्म था । क़दम कि रखा था बाहर हटाया फिर आवाज़ों का वोही **जोश** पाया । फिर बिस्मिल्लाह कह कर दहना पाउं अन्दर रखा । بِحَمْدِ اللہِ تَعَالٰی फिर वैसे ही कान ठन्डे थे । अब मा'लूम हुवा कि येह मौला عَزَّوَجَلَّ का करम और ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत और इस बन्दए नाचीज़ पर रह़मत व मऊ़नत है ।

शुक्र बजा लाया और हाज़िरे मुवाजहए आ़लिया हो कर मश्ग़ूल रहा । कोई आवाज़ न सुनाई दी, जब बाहर आया फिर वोही ह़ाल था कि ख़ानक़ाहे अक़्दस के बाहर क़ियाम गाह तक पहुंचना दुश्वार हुवा । फ़क़ीर ने येह अपने ऊपर गुज़री हुई गुज़ारिश की, कि अव्वल तो वोह ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ थी और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को लोगों से ख़ूब बयान कर ।'' मअ़ हाज़ा (इस में) ग़ुलामाने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के लिये बिशारत और मुन्किरों पर बला व ह़सरत है । इलाही عَزَّوَجَلَّ सदक़ा अपने मह़बूबों رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का हमें दुन्या व आख़िरत व क़ब्रो ह़श्र में अपने मह़बूबों عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बरकाते बे पायां से बहरा मन्द फ़रमा । (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِاٰدَابِ الدُّعَاء ص ۱۴۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़िकायत 'बाईस ख़्वाजा की चौखट देहली शरीफ़' की है । इस में ताजदारे देहली ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नुमायां करामत है । इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिल फ़र्ज़ अगर मज़ाराते औलिया पर जुहला ग़ैर शरई ह़रकात कर रहे हों और उन को रोकने की क़ुदरत न हो तब भी अपने आप को अहलुल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दरबारों की ह़ाज़िरी से **मह़रूम** न करे । हां मगर येह वाजिब

है कि उन ख़ुराफ़ात को दिल से बुरा जाने और उन में शामिल होने से बचे । बल्कि उन की त़रफ़ देखने से भी ख़ुद को बचाए । (फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 8)

उ़र्स में ना जाइज़ काम हों तो साहिबे मज़ार को तक्लीफ़ होती है

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में **अ़र्ज़** की गई : हुज़ूर ! बुज़ुर्गाने दीन के आ'रास में जो अफ़्आ़ल ना जाइज़ होते हैं इन से उन ह़ज़रात को तक्लीफ़ होती है ? तो **इरशाद** फ़रमाया : बिलाशुबा । और येही वजह है कि इन ह़ज़रात ने भी तवज्जोह कम फ़रमा दी वरना पहले जिस क़दर फ़ुयूज़ होते थे वोह अब कहां !

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 383)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ अन्धे को आंखें मिल गईं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 26 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले '**ख़ौफ़नाक जादूगर**' के सफ़ह़ा 19 पर **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : एक बार औरंगज़ैब आ़लमगीर علیہ رَحْمَةُ اللهِ القدیر सिलसिलए आ़लिया चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन

सन्जरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हुवे । इहाते में एक **अन्धा फ़क़ीर** बैठा सदा लगा रहा था : या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आंखें दे । आप ने उस फ़क़ीर से दरयाफ़्त किया : बाबा ! कितना अ़र्सा हुवा आंखें मांगते हुवे ? बोला : बरसों गुज़र गए मगर मुराद पूरी ही नहीं होती । फ़रमाया : मैं मज़ारे पाक पर हाज़िरी दे कर थोड़ी देर में वापस आता हूं अगर आंखें रोशन हो गईं फ़बिहा (या'नी बहुत ख़ूब) वरना **क़त्ल** करवा दूंगा । येह कह कर फ़क़ीर पर पहरा लगा कर बादशाह हाज़िरी के लिये अन्दर चले गए । उधर फ़क़ीर पर गिर्या तारी था और रो रो कर फ़रियाद कर रहा था : या ख़्वाजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पहले सिर्फ़ आंखों का मस्अला था अब तो जान पर बन गई है, अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने करम न फ़रमाया तो मारा जाऊंगा । जब बादशाह हाज़िरी दे कर लौटे तो उस की **आंखें रोशन हो चुकी थीं** । बादशाह ने मुस्कुरा कर फ़रमाया : तुम अब तक बे दिली और बे तवज्जोगी से मांग रहे थे और अब जान के ख़ौफ़ से तुम ने दिल की तड़प के साथ सुवाल किया तो तुम्हारी मुराद पूरी हो गई । (ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 19)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से हमें येह दर्स मिला कि फ़ैज़ पाने के लिये तड़प सच्ची और ए'तिक़ाद पक्का होना चाहिये, ढिलमिल यक़ीन (या'नी कच्चे यक़ीन) वाला न हो, मसलन सोचता हो कि फ़ुलां बुज़ुर्ग से या फ़ुलां वलिय्युल्लाह के मज़ार पर हाज़िरी देने से न जाने फ़ाइदा होगा या नहीं होगा वग़ैरा । ऐसा शख़्स **फ़ैज़** नहीं पा सकता । नीज़

फ़ैज़ मिलने में वक़्त की कोई क़ैद नहीं होगी अपना अपना मुक़द्दर होता है किसी को फ़ौरन **फ़ैज़** मिल जाता है किसी का बरसों तक काम नहीं होता। काम हो या न हो یَك دَر گِیرو مُحکَم گِیر या'नी "एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूती के साथ पकड़" के मिस्दाक़ पड़े रहना चाहिये।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका
मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ गुलाब के फूल

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा, देखा कि **गुलाब** की दो शाख़ें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के **दो फूल** उस के नथनों (या'नी नाक के दोनों सूराख़ों) पर रखे हैं। उस के अ़ज़ीज़ों ने इस ख़याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह क़ब्र खोद कर (मर्ह़ूम की लाश को) उस में रखा, अब जो देखा तो **दो अज़दहे** (या'नी दो बहुत बड़े सांप) उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह भम्भोड़ (या'नी नोच) रहे हैं ! ह़ैरान हुवे। किसी साह़िबे दिल से येह वाक़िआ़ बयान किया, उन्हों ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़दहे ही थे मगर एक वलिय्युल्लाह के मज़ार का कुर्ब था, इस की बरकत से वोह अ़ज़ाब रह़मत हो गया था, वोह **अज़दहे** दरख़्ते गुल की शक्ल हो गए थे और इन के फन

गुलाब के फूल । इस (या'नी मर्हूम) की ख़ैरिय्यत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़्न करो । वहीं ले जा कर रखा फिर वोही दरख़्ते गुल थे और वोही **गुलाब के फूल ।**

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 270 मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी की ज़मीन पर ज़बर दस्ती क़ब्ज़ा न हो और हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ किये बिग़ैर ह़त्तल मक़दूर अपने मुर्दों को मज़ाराते औलिया के क़रीब दफ़्न करना चाहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ औलियाए किराम की बरकतें नसीब होंगी । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफ़्न करो कि इन की बरकत के सबब उन पर अ़ज़ाब नहीं किया जाता । هُمُ الْقَوْمُ لَایَشْقٰی بِهِمْ جَلِیْسُهُم (या'नी) येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन (या'नी सोह़बत में रहने वाला) भी मह़रूम नहीं रहता । व लिहाज़ा ह़दीस में फ़रमाया : اُدْفِنُوْا مَوْتَاکُمْ وَسْطَ قَوْمِ الصّٰلِحِیْن (या'नी) अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़्न करो । (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الخطاب ج ۱ ص ۱۰۲ حدیث ۳۳۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《11》 क़र्ज़ मुआ़फ़ हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मीदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुझ पर क़र्ज़ था, इसी परेशानी के आ़लम में ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन जा'फ़र हुसैनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा । मैं ने क़ुरआने पाक के कुछ ह़िस्से की तिलावत

की और रो दिया, एक ज़ाइर (या'नी मज़ार की ज़ियारत के लिये आने वाले) ने मेरा रोना सुन लिया और मुझे कुछ **सोना** दिया और कहा : इस साहिबे मज़ार की ख़ातिर येह सोना ले लो । मैं ने वोह सोना लिया और चल दिया, अभी चन्द ही क़दम चला था कि मेरा क़र्ज़ ख़्वाह आ गया, मुझे देख कर मुस्कुराया और कहा : येह सोना उस ज़ाइर को वापस कर दें क्यूंकि मैं **अज्रो सवाब** का उस की निस्बत ज़ियादा हक़दार हूं । मैं ने क़र्ज़ ख़्वाह से इस मुआफ़ी का सबब दरयाफ़्त किया कि आप को मेरा ख़याल किस ने बताया है ? वोह कहने लगा : "मैं ने इस क़ब्र वाले बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा, इन्हों ने मुझे कहा है कि अगर तू हमीदी से दर गुज़र करेगा तो मैं तुझे जन्नत में महल दिलाऊंगा ।" उस ने न सिर्फ़ **मेरा क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया** बल्कि मुझे मज़ीद छे दिरहम दे दिये । हज़रते सय्यिदुना अल्लामा सख़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : येह तजरिबा है कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन जा'फ़र हुसैनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के मज़ार पर दुआ क़बूल होती है । येह क़ब्र मिस्र में सय्यिदा नफ़ीसा (बिन्ते हसन बिन ज़ैद बिन हसन बिन अली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) के मज़ार के मग़रिब में वाक़ेअ है और इस पर कुब्बा बना हुवा है । (जामेअ करामाते औलिया, जि.1 स.172)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़र्ज़ मुआफ़ करने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़रोज़ हिकायत में क़र्ज़ मुआफ़ करने का भी ज़िक्र है, इस की भी बड़ी फ़ज़ीलत है : चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا اَوْ وَضَعَ لَہٗ اَظَلَّہُ اللّٰہُ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِہٖ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّہٗ

या'नी जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे या क़र्ज़ मुआफ़ कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे अपने अ़र्श के साए में रखेगा कि जिस दिन उस के सिवा कोई साया न होगा।

(ترمذی، کتاب البیوع، ج۳، ص۵۲، الحدیث ۱۳۱۰)

हाए ! हुस्ने अ़मल नहीं पल्ले हश्र में मेरा होगा क्या या रब
गर्मिये हश्र, प्यास की शिद्दत जामे कौसर मुझे पिला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.88)

मजलिसे मज़ारातेऔलिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने और इल्मे दीन की इशाअ़त में मसरूफ़ है। (ता दमे तह़रीर) दुन्या के कमो बेश 176 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 63 मजालिस क़ाइम हैं, इन्ही में से एक '**मजलिसे मज़ाराते औलिया**' भी है जो औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के रास्ते पर चलते हुवे मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर होने वाले इस्लामी

भाइयों में **मदनी कामों** की धूमें मचाने के लिये कोशां है। येह मजलिस हत्तल मक्दूर साहिबे मज़ार के उर्स के मौक़अ़ पर **इजतिमाए ज़िक्रो ना'त** करती है, मज़ारात से मुल्हिक़ा मसाजिद में आशिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िले** सफ़र करवाती है, मज़ार शरीफ़ के इहाते में (बिल खुसूस उर्स के दिनों में) सुन्नतों भरे **मदनी हल्क़े** लगाती है जिन में वुज़ू, गुस्ल, तयम्मुम और नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ सुन्नतें सिखाई जाती हैं, और आशिक़ाने रसूल को हस्बे मौक़अ़ अच्छी अच्छी निय्यतों मसलन **बा जमाअ़त नमाज़** की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त** में शिर्कत, दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** देने या सुनने, साहिबे मज़ार के ईसाले सवाब के लिये हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहने की तरग़ीब दी जाती है। **'मजलिसे मज़ाराते औलिया'** साहिबे मज़ार की ख़िदमत में (खुसूसन अय्यामे उर्स में) ढेरो ढेर **ईसाले सवाब** का तोहफ़ा पेश करती है और साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, खुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहिबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के इन्हें **दा'वते इस्लामी** की ख़िदमात, जामिअ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क होने वाले **मदनी काम** वग़ैरा से आगाह रखती है।

मज़ारात पर हाज़िरी देने वाले इस्लामी भाइयों को **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़त़ा कर्दा **नेकी की दा'वत** भी पेश की जाती है।

नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से सुन्नतों भरे **मदनी ह़ल्क़ों** का सिलसिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अह़कामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी ह़ल्क़ों में शामिल हो जाइये। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से माला माल फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾12﴿ दाता हुज़ूर की त़रफ़ से मदनी क़ाफ़िले की ख़ैर ख़्वाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की दा'वते इस्लामी पर मीठी नज़र है, बिल ख़ुसूस मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िरों पर जो करम नवाज़ियां होती हैं उन की एक झलक

आप भी मुलाहज़ा कीजिये और मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र के लिये कमर बस्ता हो जाइये, चुनान्चे, **इस्लामी भाइयों** का बयान है कि हमारा मदनी क़ाफ़िला मर्कज़ुल औलिया लाहौर **दाता दरबार** की मस्जिद के अन्दर तीन दिन के लिये क़ियाम पज़ीर था । हम मदनी क़ाफ़िले के जदवल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों की तर्बिय्यत ह़ासिल कर रहे थे, दौराने ह़ल्क़ा एक साह़िब तशरीफ़ लाए । उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ बड़ी मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात की, फिर कहने लगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज रात मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और **ह़ुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हजवेरी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मुझ गुनहगार के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ फ़रमाया : **''दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले वाले आ़शिक़ाने रसूल तीन दिन के लिये मेरी मस्जिद में ठहरे हुवे हैं लिहाज़ा तुम उन के खाने का इन्तिज़ाम करो ।''** लिहाज़ा मैं मदनी क़ाफ़िले वालों की ख़ैर ख़्वाही के लिये खाना लाया हूं आप ह़ज़रात क़बूल फ़रमाइये ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام मज़ारात में रहते हुवे भी अपने मेहमानों की ख़ातिर मदारात फ़रमाते हैं ।

क्या ग़रज़ दर दर फिरूं मैं भीक लेने के लिये
है सलामत आस्ताना आप का दाता पिया

झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन
हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ हज़रते शाहे आलम عليه رَحْمَةُ الله الاكرم का तख़्त

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **'तज़्किरए सदरुश्शरीआ'** के सफ़ह़ा 36 पर लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शाहे आलम عليه رَحْمَةُ الله الاكرم बहुत बड़े आलिमे दीन और पाए के वलिय्युल्लाह थे । मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत ही लगन के साथ इल्मे दीन की ता'लीम देते थे । एक बार बीमार हो कर साह़िबे फ़राश हो गए और पढ़ाने की छुट्टियां हो गईं जिस का आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बेह़द अफ़्सोस था । तक़रीबन चालीस दिन के बा'द सिह़्ह़त याब हुवे और मद्रसे में तशरीफ़ ला कर ह़स्बे मा'मूल अपने तख़्त पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे । चालीस दिन पहले जहां सबक़ छोड़ा था वहीं से पढ़ाना शुरूअ़ किया । त़लबा ने मुतअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने येह मज़मून तो बहुत पहले पढ़ा दिया है गुज़श्ता कल तो आप ने फुलां सबक़ पढ़ाया था ! येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन मुराक़िब हुवे । उसी वक़्त **सरकारे मदीना,** क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, मुश्कबार फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"शाहे आलम** ! तुम्हें अपने अस्बाक़ रह जाने का बहुत अफ़्सोस था लिहाज़ा तुम्हारी जगह तुम्हारी सूरत में तख़्त पर बैठ कर मैं रोज़ाना सबक़ पढ़ा दिया करता था ।"

जिस तख़्त पर **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हुवा करते थे उस पर अब ह़ज़रते क़िब्ला सय्यिदुना **शाहे आ़लम** علیہ رَحْمَةُ اللهِ الاکرم किस त़रह़ बैठ सकते थे लिहाज़ा फ़ौरन तख़्त पर से उठ गए। तख़्त को यहां की मस्जिद में मुअ़ल्लक़ कर दिया गया। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **शाहे आ़लम** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लिये दूसरा तख़्त बनाया गया। आप علیہ رَحْمَةُ اللهِ الاکرم के विसाल के बा'द उस तख़्त को भी यहां मुअ़ल्लक़ कर दिया गया। इस मक़ाम पर दुआ़ क़बूल होती है।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में

ख़लीफ़ए सदरे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ क़ारी मुह़म्मद मुस्लेहुद्दीन सिद्दीक़ी अल क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मैं (सगे मदीना عفی عنہ) ने सुना है, वोह फ़रमाते थे : **मुसन्निफ़े बहारे शरीअ़त** ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हमराह मुझे मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद शरीफ़ (हिन्द) में ह़ज़रते सय्यिदुना **शाहे आ़लम** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दरबार में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई, इन दोनों तख़्तों के नीचे ह़ाज़िर हुवे और अपने अपने दिल की दुआ़एं कर के जब फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ علیہ رحمۃُ ربِّ الورٰی से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने क्या दुआ़ मांगी ? फ़रमाया : **"हर साल ह़ज नसीब होने की।"** मैं समझा ह़ज़रत की दुआ़ का मन्शा येही होगा कि जब तक ज़िन्दा रहूं

ह़ज की सआ़दत मिले । लेकिन येह दुआ़ भी ख़ूब क़बूल हुई कि उसी साल ह़ज का क़स्द फ़रमाया । **सफ़ीनए मदीना** में सुवार होने के लिये अपने वत़न मदीनतुल उ़लमा घोसी (ज़िल्अ़ आ'ज़मगढ़) से बम्बई तशरीफ़ लाए । यहां आप को **निमोनिया** हो गया और सफ़ीने में सुवार होने से क़ब्ल ही सिने 1367 हिजरी के ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम की दूसरी शब 12 बज कर 26 मिनट पर ब मुत़ाबिक़ 6 सितम्बर 1948 को आप वफ़ात पा गए ।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की भी नौबत न आई थी सफ़ीने में

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुबारक तख़्त के तह़्त मांगी हुई दुआ़ कुछ ऐसी क़बूल हुई कि अब आप اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक ह़ज का सवाब ह़ासिल करते रहेंगे । ख़ुद ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मश्हूरे ज़माना किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल ह़िस्सा 6 सफ़ह़ा 1034 पर येह ह़दीसे पाक नक़्ल की है : जो ह़ज के लिये निकला और फ़ौत हो गया तो क़ियामत तक उस के लिये ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो उ़मरह के लिये निकला और फ़ौत हो गया उस के लिये क़ियामत तक उ़मरह करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो जिहाद में गया और फ़ौत हो गया उस के लिये क़ियामत तक ग़ाज़ी का सवाब लिखा जाएगा ।

(مسند أبي یعلی ج۵، ص۴۴۱ حدیث ۶۳۲۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت)(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 38)

मज़ारात पर क्या दुआ़ मांगनी चाहिये ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला ह़िकायत से येह भी दर्स मिला कि मज़ाराते औलिया पर जा कर 'बीमारी, बे रोज़गारी, क़र्ज़दारी, घरेलू नाचाक़ी और बे अवलादी' जैसे दुन्यावी मसाइल के ह़ल की दुआ़ के साथ साथ "ईमान की सलामती, ह़रमैने त़य्यिबैन की बा अदब ह़ाज़िरी, वक़्ते नज़्अ़ में आसानी, क़ब्रो ह़श्र में कामयाबी और पुल सिरात़ पर साबित क़दमी" जैसी उख़रवी ने'मतें भी मांगनी चाहिएं, इस ज़िम्न में एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा हो : चुनान्चे,

बड़ी चीज़ मांगो

एक शख़्स का बयान है कि मैं मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में मुक़ीम था, मुझे भूक ने परेशान किया तो मज़ारे अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं" और हुजरए मुबारका के क़रीब ही बैठ गया। **सादाते किराम** में से एक बुज़ुर्ग मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहा : "चलो।" मैं ने पूछा : "किधर ?" जवाब दिया : "हमारे घर पर ताकि कुछ खा पी लो।" मैं उन के साथ चल दिया, उन्हों ने मुझे **सरीद** का एक बहुत बड़ा प्याला दिया जिस में गोश्त और ज़ैतून वाफ़िर (या'नी कसीर) मिक़्दार में था। मैं ने ख़ूब खाया और वापसी का इरादा किया, उन्हों ने फिर फ़रमाया : "मज़ीद खाओ।" मैं ने थोड़ा और खा लिया, जब वापस होने लगा तो उन्हों ने नसीह़त के मदनी फूल मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : "मेरे भाई ! ज़रा येह ख़याल

तो किया करो कि तुम लोग कितने दूर दराज़ अ़लाक़ों से चलते हो ! जंगल व बयाबान तै़ करते हो, समुन्दरों को उ़बूर करते हो, अहलो इ़याल को पीछे छोड़ते हो और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते हो, मगर यहां पहुंच कर तुम्हारा मुन्तहाए मक़्सूद (या'नी सब से बड़ा मुत़ालबा) येही रह जाता है कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोटी का टुकड़ा अ़त़ा कर दीजिये ! ऐ मेरे भाई ! अगर तुम ने **जन्नत** मांगी होती, गुनाहों की **मग़्फ़िरत** का सुवाल किया होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी का मुत़ालबा किया होता या इसी क़िस्म का कोई अ़ज़ीम मक़्सद व मुद्दआ़ इन के हुज़ूर पेश किया होता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से वोह **अ़ज़ीम मक़ासिद** भी तुम्हें ह़ासिल हो जाते।" (شواہدالحق ص۲۴۰)

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न 'ला' है न ह़ाजत 'अगर' की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿14﴾ हो मदीने का टिकट मुझ को अ़त़ा दाता पिया

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ग़ालिबन सिने 1993 ईसवी के मौसिमे ह़ज में किसी वजह से सफ़रे मदीना न कर सके थे जिस का आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बहुत सदमा था, अपनी ह़सरतों का इज़हार आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इन अश्आ़र में भी किया है :

काश ! फिर मुझे ह़ज का इ़ज़्न मिल गया होता

और रोते रोते मैं, काश ! चल पड़ा होता

मुझ को फिर मदीने में इस बरस भी बुलवाते

आप का बड़ा एह़सां मुझ पे येह शहा होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 172)

फिर जब **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه 12 माह के सफ़र के दौरान मर्कज़ुल औलिया लाहौर में थे तो येह इस्तिग़ासा लिखा :[1]

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़त़ा दाता पिया

आप को ख़्वाजा पिया का वासित़ा दाता पिया

दौलते दुन्या का साइल बन के मैं आया नहीं

मुझ को दीवाना मदीने का बना दाता पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 506)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली हजवेरी अल मा'रूफ़ दाता गन्ज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे मुबारक पर ह़ाज़िर हो कर पेश कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ ही दिन बा'द एक इस्लामी भाई ने बिग़ैर किसी मुत़ालबे के **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ह़ाज़िरी का इन्तिज़ाम कर दिया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1....मुकम्मल कलाम '**वसाइले बख़्शिश**' (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) के सफ़ह़ा 506 पर मुलाह़ज़ा कीजिये ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मज़ारात पर ह़ाज़िरी के 19 मदनी फूल

ज़ियारते कुबूर आख़िरत की याद दिलाती है

۞ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیۡہِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسۡلِیۡم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं ने तुम को ज़ियारते कुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है।

(سُنَنِ ابن ماجہ ج۲ص ۲۵۲حدیث۱۵۷۱دار المعرفۃ)

शुहदाए उहुद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते

۞ हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **शुहदाए उहुद** عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की मुबारक क़ब्रों की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ़ करते।

(مُصَنَّف عَبۡدالرَّزّاق ج۳ص۳۸۱رقم ۶۷۴۵،تفسیر دُرِّ مَنْثور ج۴ص۶۴۰)

मुसलमानों की क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत है

۞ कुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और मज़ाराते औलियाए किराम व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की ह़ाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और इन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा है)। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 532) हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे, जुमुआ़ या जुमा'रात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में अफ़्ज़ल रोज़े जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हिस्सा 4 स. 848)

मज़ारातेऔलिया से नफ़्अ़ मिलता है

۞ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारातेत़य्यिबा पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है, वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर वहां कोई मुन्करे शरई हो मसलन औरतों से इख़्तिलात़ तो इस की वजह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता, बल्कि इसे बुरा जाने और मुमकिन हो तो बुरी बात ज़ाइल करे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हिस्सा. 4 स. 848)

शुहदाए किराम के मज़ारात पर सलाम का त़रीक़ा

۞ शुहदाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारातेत़ाहिरात की ज़ियारत के वक़्त इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ **तर्जमा :** तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र के बदले, पस आख़िरत क्या ही अच्छा घर है।

(فتاوی عالمگیری ج۵ص۳۵۰)

क़ब्रों पर पाउं न रखे

۞ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसलमानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले। 'रद्दुल मुह़तार' में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है। (رَدُّالْمُحتار ج۱ ص۶۱۲) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमाने ग़ालिब हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है (دُرِّمُختار ج۳ص۱۸۳ دارالمعرفۃ بیروت) कई मज़ारातेऔलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसलमानों की क़ब्रें

मिस्मार (या'नी तोड़ फोड़) कर के फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लेटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत और ज़िक्रो अज़्कार के लिये बैठना वग़ैरा **हराम** है, दूर ही से फ़ातिहा पढ़ लीजिये।

फ़ुज़ूल बातें न करें

۞ मज़ार शरीफ़ या क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाते हुवे रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो। (فتاوی عالمگیری ج۵ ص ۳۵۰)

सिरहाने से न आएं

۞ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के मुवाजहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो और उस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइन्ती (پا۔اِن۔تِی या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 523, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

क़ब्र को बोसा न दें

۞ क़ब्र को बोसा न दें, न क़ब्र पर हाथ लगाएं (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 522, 526) बल्कि क़ब्र से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं।

मज़ार पर चादर चढ़ाना

۞ बुज़ुर्गाने दीन और औलिया व सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین के मज़ाराते त़य्यिबात पर ग़िलाफ़ (या'नी चादर) डालना जाइज़ है, जब कि येह मक़्सूद हो कि साहिबे मज़ार की वक़्अ़त

(या'नी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत) अ़वाम की नज़र में पैदा हो, इन का अदब करें, इन के बरकात ह़ासिल करें। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۵۹۹)

क़ब्र पर फूल डालना

۞ क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।

क़ब्र पर अगरबत्ती जलाना

۞ क़ब्र के ऊपर 'अगरबत्ती' न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अदबी) और बद फ़ाली है (और इस से मय्यित को तक्लीफ़ होती है) हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) **क़ब्र** के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है। (मुलख़्ख़सन फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 482-525)

क़ब्र पर मोमबत्ती रखना

۞ क़ब्र पर चराग़ या मोमबत्ती वग़ैरा न रखे कि येह आग है, और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को अज़िय्यत (या'नी तक्लीफ़) होती है, हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र की एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर मोमबत्ती या चराग़ रख सकते हैं।

मज़ारात पर चराग़ां करना

۞ अगर शम्एं रोशन करने में फ़ाइदा हो कि मौज़ए कुबूर में मस्जिद है या कुबूर सरे राह (या'नी रास्ते में) हैं या वहां कोई शख़्स बैठा है या मज़ार किसी वलिय्युल्लाह या मुह़क़्क़िक़ीन उ़लमा में से किसी आ़लिम का है, वहां शम्एं

रोशन करें **इन की रूहे मुबारक की ता'ज़ीम के लिये** जो अपने बदन की, ख़ाक पर ऐसी तजल्ली डाल रही है जैसे आफ़्ताब ज़मीन पर, ताकि इस रोशनी (या'नी लाइटिंग) करने से लोग जानें कि येह वली का मज़ारे पाक है ताकि इस से तबर्रुक (या'नी बरकत ह़ासिल) करें और वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगें कि इन की दुआ़ क़बूल हो, तो येह अम्र जाइज़ है इस से अस्लन मुमानअ़त नहीं, और आ'माल का मदार निय्यतों पर है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 490 اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة ج٢ص٦٣٠)

क़ब्र का त़वाफ़

۞ क़ब्र का त़वाफ़ करना मन्अ़ है।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 9 स. 527 मुलतक़त़न)

क़ब्र को सजदा करना

۞ क़ब्र को सजदए ता'ज़ीमी करना ह़राम है और अगर इ़बादत की निय्यत हो तो कुफ़्र है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या जि. 22 स. 423)

वालिदैन की क़ब्र की ज़ियारत करें

۞ कभी कभी मां-बाप की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये भी जाया करें। इन के मज़ारों पर फ़ातिह़ा पढ़ें। सलाम करें और इन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करें इस से मां-बाप की अरवाह़ को खुशी होगी और फ़ातिह़ा का सवाब फ़िरिश्ते नूर की थालियों में रख कर इन के सामने पेश करेंगे और मां-बाप खुश हो कर अपने बेटे बेटियों को दुआ़एं देंगे।

(जन्नती ज़ेवर, स. 94)

शबे बराअत में ज़ियारते क़ुबूर करें

۞ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात जिस को शबे बराअत कहते हैं बहुत मुबारक रात है । इस रात में क़ब्रिस्तान जाना, वहां फ़ातिहा पढ़ना सुन्नत है, इसी त़रह़ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िर होना भी सवाब है ।

(इस्लामी ज़िन्दगी स. 133 मुलख़्ख़सन)

औ़रतों की मज़ारात पर ह़ाज़िरी

۞ इस्लामी बहनें मज़ारात पर न जाएं बल्कि घर से ही ईसाले सवाब कर दिया करें । हां ! रौज़ए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी के लिये जा सकती हैं । सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : और अस्लम (या'नी सलामती का रास्ता) येह है कि औ़रतें मुत़लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (या'नी रोना पीटना) है और सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ السبين की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अदबी करेंगी तो औ़रतों में येह दोनों बातें कसरत से पाई जाती हैं ।

(बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, ह़िस्सा 4, स. 849 मक्तबतुल मदीना)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने औ़रतों को मज़ारात पर जाने की जा बजा मुमानअ़त फ़रमाई, चुनान्चे, एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : इमाम क़ाज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से इस्तिफ़्ता (सुवाल) हुवा कि औ़रतों का मक़ाबिर को जाना जाइज़ है या नहीं ? फ़रमाया : ऐसी जगह जवाज़ व अ़दमे जवाज़ (या'नी जाइज़ व

ना जाइज़ का) नहीं पूछते, येह पूछो कि इस में औ़रत पर कितनी ला'नत पड़ती है ? जब घर से कुबूर की त़रफ़ चलने का इरादा करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों की ला'नत होती है । जब घर से बाहर निकलती है सब त़रफ़ों से शैत़ान उसे घेर लेते हैं, जब क़ब्र तक पहुंचती है मय्यित की रूह़ उस पर ला'नत करती है जब तक वापस आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9 स. 557)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करते रहिये और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये । आइये तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब **'ग़ीबत की तबाह कारियां'** सफ़ह़ा 466 पर लिखते हैं : तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की 'मर्कज़ी मजलिसे शूरा' के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद फ़ारूक़ अल**

अ़त्तारियुल मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِي के बारे में मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुज़ुर्ग थे और गोया इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे : "كُنْ فِي الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ" या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो ।" (صحیح البخاری ج۴ص۲۲۳ حدیث۶۴۱۶) 18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 17-2-2006 बरोज़ जुमुआ़ नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द अपनी क़ियाम गाह (वाक़ेअ़ गुलशने इक़्बाल, बाबुल मदीना कराची) में अचानक ह़रकते क़ल्ब बन्द होने के सबब ब उ़म्र तक़रीबन 30 बरस जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को **सह़राए मदीना,** बाबुल मदीना कराची में दफ़्न किया गया । विसाल शरीफ़ के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द या'नी 25 रजबुल मुरज्जब सिने. 1430 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 18-7-2009 हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूस्लाधार बरसात हुई जिस की वजह से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبارى की क़ब्र दरमियान से खुल गई । जो इस्लामी भाई **सह़राए मदीना** में ह़िफ़ाज़ती उमूर पर मुतअ़य्यन हैं उन्हों ने सुब्ह़ के वक़्त देखा कि **क़ब्र से सब्ज़ रंग की रोशनी निकल रही है ।** आ़रिज़ी त़ौर पर क़ब्र दुरुस्त करने वाले इस्लामी भाइयों का ह़ल्फ़िया (या'नी क़सम खा कर) कुछ यूं बयान है कि हम ने देखा कि तदफ़ीन के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द भी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी سَلَّمَهُ اللهُ الغنی की मुबारक लाश और कफ़न इस त़रह़ सलामत थे कि गोया अभी

अभी इन्तिक़ाल हुवा हो, तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, इमामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ुल्फ़ों का कुछ हिस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरा मुबारक भी क़िब्ला रुख़ था। मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की क़ब्र मुबारक से ख़ुश्बू की ऐसी लपटें आ रही थीं कि हमारे मशामे जां मुअ़त्तर हो गए। क़ब्र में बारिश का पानी उतर जाने की वजह से येह इमकान था कि क़ब्र मज़ीद धंस जाए और सिलें मर्हूम के वुजूदे मसऊ़द को सदमा पहुंचाए लिहाज़ा इस वाक़िए़ के तक़रीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध 6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हिजरी (28-7-2009) ब शुमूल मुफ़्तियाने किराम व उ़लमाए इ़ज़्ज़ाम हज़ार हा इस्लामी भाइयों का कसीर मजमअ़ हुवा, ग़ुलाम ज़ादा अबू उसैद ह़ाजी उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्तार मदनी سلّمہُ اللہ الغنی पहले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीए़ क़ब्र के अन्दर उतरे ताकि येह अन्दाज़ा लगाएं कि आया मुन्तक़िली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की ह़ाजत है या अन्दर रहते हुवे भी क़ब्र शरीफ़ की ता'मीरे नौ मुमकिन है ? उन्हों ने अन्दर का जाइज़ा लिया और अन्दर ही से दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती साह़िब को सूरते ह़ाल बयान की उन्हों ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक्म फ़रमाया, ग़ुलाम ज़ादा ह़ाजी उ़बैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया, चुनान्चे, पुरानी क़ब्र के अन्दरूनी माह़ोल और ऊपर से मिट्टी वग़ैरा गिरने के बा वुजूद اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्हों ने **इमामा शरीफ़,**

पेशानी मुबारक और ज़ुल्फ़ों के बा'ज़ हिस्से की कामयाब मूवी बना ली, जो कि कुछ ही देर बा'द 'सह़राए मदीना' में लगाई गई मुख़्तलिफ़ स्क्रीनों पर हज़ारों इस्लामी भाइयों को दिखा दी गई, उस वक़्त लोगों के जज़्बात दीदनी थे, येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर बे शुमार इस्लामी भाई अश्कबार हो गए। इस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी शब 7 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हिजरी (29-7-2009) को दा'वते इस्लामी के **मदनी चैनल** पर बराहे रास्त **'ख़ुसूसी मदनी मुकालमा'** नश्र किया गया जिस में दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के लाखों नाज़िरीन को केमेरे के अन्दर मह़फ़ूज़ कर्दा क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी सह़ीह़ सलामत लाश मुबारक के इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गेसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई। चूंकि येह ख़बर हर त़रफ़ जंगल की आग की त़रह़ फैल चुकी थी लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ शहरों के जुदा जुदा अ़लाक़ों के इस्लामी भाइयों के बयानात का लुब्बे लुबाब है कि **ख़ुसूसी मदनी मुकालमे** के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस त़रह़ सूने हो गए थे जिस त़रह़ मुसलमानों के अ़लाक़ों में रमज़ानुल मुबारक में इफ़्त़ार के वक़्त होते हैं और T.V पर घर घर से 'ख़ुसूसी मदनी मुकालमे' की आवाज़ सुनाई दे रही थी। होटलों, नाई की दुकानों वग़ैरा में जहां जहां T.V सेट मौजूद थे वहां अ़वाम हुजूम दर हुजूम जम्अ़ हो कर **मदनी चैनल** पर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की मदनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे।

एक इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ मदनी चैनल पर 'खुसूसी मदनी मुकालमा' सुन कर और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रूह परवर झलकियां देख कर एक ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने इस सिलसिले में शबे बराअत 1430 हिजरी के मुबारक मौक़अ़ पर एक तारीख़ी V.C.D बनाम 'मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली' जारी कर दी चन्द ही रोज़ में बहुत बड़ी ता'दाद में V.C.Ds फ़रोख़्त हो गईं ।

जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता
ग़ुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीं होता

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने ख़्वाब में बताया कि.....

इस वाक़िए़ के बा'द किसी ने मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी अल मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की ख़्वाब में ज़ियारत की तो पूछा : आप को येह रुत्बा कैसे मिला ? मर्हूम ख़ामोश रहे, बिल आख़िर इस्रार करने पर फ़रमाया : "(ज़बान पर) **कुफ़्ले मदीना** लगाने की वजह से ।"

मर्हूम वाक़ेई निहायत सन्जीदा और कम गो थे, हम सभी के लिये इस वाक़िए़ में 'ख़ामोशी' की तरग़ीब है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عزوجل इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मेरा मदनी मक्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह के लिये ''मदनी इन्आमात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

0133159

MC 1280

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net